IOSR Journal of Humanities and Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 29, Issue 12, Series 1 (December, 2024) 71-76
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

भारतीय कला के विभिन्न रूपों का अध्ययन

डॉ बीना दीक्षित
प्रोफेसर ललित कला विभाग
ओम स्टर्लिंग ग्लोबल यूनिवर्सिटी

आशीष कुमार
ललित कला विभाग
Mail id.hunkphogat@gmail.com

सार

भारतीय कला का अध्ययन सदियों से विकसित हुई एक समृद्ध और विविध सांस्कृतिक विरासत में गोता लगाने जैसा है। यह केवल सौंदर्यशास्त्र की सराहना नहीं है, बल्कि एक सभ्यता की आत्मा, उसके विश्वासों, दर्शन और ऐतिहासिक यात्रा को समझना भी है। सिंधु घाटी सभ्यता की प्राचीन कलाकृतियों से लेकर समकालीन अभिव्यक्तियों तक, भारतीय कला ने आध्यात्मिकता, जीवनशैली और समाज के हर पहलू को दर्शाया है। भारतीय कला की जड़ें प्रागैतिहासिक काल से जुड़ी हैं, जैसा कि भीमबेटका जैसी गुफाओं में मिले शैल चित्रों से स्पष्ट होता है। ये प्रारंभिक अभिव्यक्तियाँ मानव की रचनात्मकता और प्रकृति से उसके जुड़ाव को दर्शाती हैं। इसके बाद, सिंधु घाटी सभ्यता ने शहरी नियोजन और टेराकोटा मूर्तियों के माध्यम से अपनी कलात्मकता का प्रदर्शन किया। मौर्य काल ने सम्राट अशोक के स्तंभों और उनकी राजसी मूर्तियों के साथ कला में एक महत्वपूर्ण मोड़ दिया, जिसमें बौद्ध धर्म का प्रभाव स्पष्ट था। गुप्त काल को भारतीय कला का "स्वर्ण युग" माना जाता है, जिसमें अजंता की गुफाओं के भित्तिचित्रों और सारनाथ की मूर्तियों में अद्वितीय परिष्कार और आध्यात्मिक गहराई दिखाई देती है। इसी काल में नागर और द्रविड़ शैली में विशाल मंदिरों का निर्माण भी शुरू हुआ। मध्यकालीन भारत में कला का विकास जारी रहा। राजपूत और मुगल शासकों के संरक्षण में लघु चित्रकला (मिनिएचर पेंटिंग) एक प्रमुख कला रूप के रूप में उभरी। मुगल चित्रकला में फ़ारसी और भारतीय शैलियों का सुंदर मिश्रण देखा गया, जिसमें दरबारी जीवन, शिकार के दृश्य और ऐतिहासिक घटनाओं को दर्शाया गया था। दूसरी ओर, राजपूत चित्रकला ने धार्मिक और पौराणिक विषयों पर ध्यान केंद्रित किया, विशेष रूप से कृष्ण लीला और रामायण की कहानियों पर। स्थापत्य कला में, मुगल काल में ताजमहल और लाल किला जैसी भव्य संरचनाओं का निर्माण हुआ, जो समरूपता और सुंदरता का प्रतीक हैं।

मुख्य शब्द :
भारतीय, मूर्तिकला, संस्कृति

भूमिका

भारतीय कला का अध्ययन समय और संस्कृतियों के बीच एक आकर्षक यात्रा है। यह कला केवल आँखों को भाने वाली नहीं है, बल्कि एक गहरा दार्शनिक और आध्यात्मिक अर्थ भी रखती है। यह भारत की आत्मा का एक दर्पण है, जो इसकी अविश्वसनीय विविधता, लचीलेपन और शाश्वत रचनात्मक भावना को दर्शाता है।

भारतीय कला का इतिहास हज़ारों वर्षों पुराना है, जो सभ्यता के विकास के साथ-साथ फला-फूला है। यह केवल सौंदर्यशास्त्र का विषय नहीं है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन और जीवन शैली का एक गहरा प्रतिबिंब है। भारतीय कला अपने विविध रूपों, शैलियों और अभिव्यक्तियों के कारण दुनिया भर में अद्वितीय और प्रशंसित है। इसमें दृश्य कला, प्रदर्शन कला और लोक कलाएँ शामिल हैं, जो एक समृद्ध विरासत का निर्माण करती हैं।

औपनिवेशिक काल के दौरान, पश्चिमी कला रूपों का प्रभाव बढ़ा, जिससे कंपनी शैली और बाद में बंगाल स्कूल का उदय हुआ, जिसने पारंपरिक भारतीय कला को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया। राजा रवि वर्मा जैसे कलाकारों ने भारतीय पौराणिक कथाओं को यूरोपीय यथार्थवाद के साथ चित्रित किया। 20वीं सदी के मध्य से भारतीय कला में आधुनिकता और समकालीन विचारों का समावेश हुआ। एम.एफ. हुसैन, एस.एच. रज़ा और अमृता शेरगिल जैसे कलाकारों ने वैश्विक कला परिदृश्य पर भारत का प्रतिनिधित्व किया, जबकि वर्तमान में, भारतीय कला निरंतर विकसित हो रही है, जिसमें नए माध्यमों और विषयों का प्रयोग किया जा रहा है।

भारत में दृश्य कला का एक लंबा और शानदार इतिहास रहा है। चित्रकला इसका एक प्रमुख अंग है। प्राचीन काल में, अजंता और एलोरा की गुफाओं में मिली भित्ति चित्रकारी भारतीय चित्रकला की प्रारंभिक ऊँचाइयों को दर्शाती है। ये चित्र बौद्ध धर्म की कहानियों और जीवन को जीवंत करते हैं, जिनमें रंगों और भावनाओं का अद्भुत संगम है। मध्यकाल में, मुगल और राजपूत शैलियों का विकास हुआ। मुगल चित्रकला में दरबारी जीवन, शिकार और ऐतिहासिक घटनाओं का सूक्ष्म चित्रण मिलता है, जबकि राजपूत चित्रकला में धार्मिक विषयों, प्रेम कहानियों और पौराणिक कथाओं को दर्शाया गया है। इसके अलावा, पूरे भारत में विभिन्न प्रकार की लोक चित्रकलाएँ प्रचलित हैं, जैसे मधुबनी, पटचित्र और वर्ली, जो क्षेत्रीय पहचान और जीवन शैली को दर्शाती हैं।

मूर्ति कला भी भारतीय कला का एक महत्वपूर्ण पहलू है। हड़प्पा सभ्यता से लेकर मौर्य, गुप्त और चोल वंशों तक, मूर्ति कला ने विभिन्न रूपों और शैलियों में विकास किया है। मंदिरों की दीवारों पर उत्कीर्ण देवी-देवताओं, यक्षों और यक्षिणियों की मूर्तियाँ न केवल कलात्मक उत्कृष्टता का प्रतीक हैं, बल्कि धार्मिक भावनाओं और दार्शनिक विचारों को भी व्यक्त करती हैं। चोल काल की कांस्य मूर्तियाँ, विशेष रूप से नटराज की मूर्तियाँ, अपनी गतिशीलता और विवरण के लिए प्रसिद्ध हैं।

प्रदर्शन कला के क्षेत्र में, भारत ने दुनिया को कई अनूठी शैलियाँ दी हैं। भारतीय शास्त्रीय नृत्य अपनी जटिल मुद्राओं, भावों और तालबद्ध पैरों के काम के लिए जाने जाते हैं। भरतनाट्यम, कथक, ओडिसी, कुचिपुड़ी,

मोहिनीअट्टम और कथकली जैसे नृत्य रूप सदियों से विकसित हुए हैं और इनमें धार्मिक कथाओं और पौराणिक प्रसंगों को दर्शाया जाता है। प्रत्येक नृत्य शैली की अपनी विशिष्ट वेशभूषा, संगीत और प्रस्तुति शैली होती है।

साहित्य की समीक्षा

शास्त्रीय संगीत भारतीय संस्कृति की आत्मा है। इसे मुख्य रूप से दो प्रमुख प्रणालियों में विभाजित किया गया है: उत्तरी भारत में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत और दक्षिणी भारत में कर्नाटक शास्त्रीय संगीत। हिंदुस्तानी संगीत में रागों और तालों का उपयोग होता है, जिसमें ख्याल, ध्रुपद और ठुमरी जैसी शैलियाँ शामिल हैं। कर्नाटक संगीत में भी राग और ताल महत्वपूर्ण होते हैं, लेकिन इसकी संरचना अधिक औपचारिक होती है। दोनों ही प्रणालियों में गायन और वाद्य संगीत का महत्वपूर्ण स्थान है। [1]

भारत में लोक और जनजातीय कलाओं का भी एक विशाल और रंगीन संसार है। ये कला रूप स्थानीय समुदायों की अनूठी परंपराओं, त्योहारों और दैनिक जीवन को दर्शाते हैं। मिट्टी के बर्तन, कपड़ा बुनाई, आभूषण बनाना, टोकरियाँ बुनना और भित्तिचित्र बनाना ऐसी कई कलाएँ हैं जो ग्रामीण भारत में फलती-फूलती हैं। [2]

आधुनिक काल में, मूर्तिकला ने यथार्थवादी और अमूर्त दोनों शैलियों को अपनाया है। समकालीन कलाकार अपनी कृतियों में पारंपरिक और आधुनिक तकनीकों का मिश्रण कर रहे हैं, जो भारतीय मूर्तिकला की निरंतर विकासशील प्रकृति को दर्शाता है। [3]

भारतीय चित्रकला का इतिहास सहस्राब्दियों पुराना है, जो पाषाण युग से लेकर आधुनिक काल तक अपनी समृद्ध परंपरा और विविधता को दर्शाता है। यह केवल रंगों और रेखाओं का संयोजन नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता, दर्शन, धर्म और जीवनशैली का जीवंत दर्पण है। भारतीय चित्रकला का अध्ययन हमें इस उपमहाद्वीप की सांस्कृतिक गहराई और कलात्मक अभिव्यक्ति के विकास को समझने में मदद करता है। [4]

प्रारंभिक भारतीय चित्रकला के प्रमाण प्रागैतिहासिक शैल चित्रों में मिलते हैं, जैसे कि भीमबेटका की गुफाओं में, जो आदिमानव के जीवन, शिकार और अनुष्ठानों को दर्शाते हैं। ये चित्रकलाएँ न केवल कलात्मक अभिव्यक्ति थीं, बल्कि उस समय के मानव समाज के लिए संवाद का एक महत्वपूर्ण माध्यम भी थीं। इसके बाद, सिंधु घाटी सभ्यता में मिट्टी के बर्तनों पर ज्यामितीय आकृतियाँ और कुछ मानव आकृतियाँ पाई गईं, जो चित्रकला के प्रारंभिक रूपों को इंगित करती हैं। [5]

भारतीय कला के विभिन्न रूपों का अध्ययन

आधुनिक और समकालीन भारतीय चित्रकला अत्यधिक विविध है, जिसमें अमूर्त कला, पॉप आर्ट, प्रतिष्ठान कला और डिजिटल कला सहित विभिन्न शैलियों और माध्यमों का प्रयोग किया जा रहा है। एम.एफ. हुसैन, एस.एच. रजा, तैयब मेहता और फ्रांसिस न्यूटन सूजा जैसे कलाकारों ने वैश्विक कला परिदृश्य में भारतीय कला को

एक विशिष्ट स्थान दिलाया है। आज, भारतीय चित्रकला न केवल अपनी जड़ों से जुड़ी हुई है, बल्कि वैश्विक कला आंदोलनों से भी प्रभावित है, जिससे यह लगातार विकसित हो रही है।

भारतीय चित्रकला का अध्ययन हमें केवल कला के इतिहास को नहीं सिखाता, बल्कि हमें भारतीय संस्कृति, समाज और उसके आध्यात्मिक मूल्यों की गहरी समझ भी प्रदान करता है। यह एक निरंतर विकसित होती हुई कला परंपरा है जो अतीत की समृद्ध विरासत को संजोए हुए है और भविष्य के लिए नए मार्ग प्रशस्त कर रही है।

मौर्य और गुप्त काल भारतीय कला के स्वर्ण युग के रूप में जाने जाते हैं। अजंता और एलोरा की गुफाओं में भित्ति चित्र बौद्ध धर्म के सिद्धांतों, जातक कथाओं और दरबारी जीवन का उत्कृष्ट चित्रण करते हैं। ये चित्रकलाएँ अपनी तकनीकी प्रवीणता, रंग संयोजन और भावाभिव्यक्ति के लिए विश्व प्रसिद्ध हैं। इनमें प्राकृतिक रंगों का प्रयोग किया गया था, और इनकी स्थायित्व आज भी आश्चर्यचकित करता है। राजपूत और मुगल काल में लघुचित्रकला का उदय हुआ। मुगल चित्रकला में फ़ारसी और भारतीय शैलियों का सुंदर मिश्रण देखने को मिलता है, जिसमें दरबारी दृश्यों, शिकार और ऐतिहासिक घटनाओं का सजीव चित्रण किया गया। राजपूत चित्रकला, विशेष रूप से मेवाड़, किशनगढ़ और कांगड़ा शैलियाँ, भक्ति, प्रेम और लोक कथाओं पर केंद्रित थीं, जिसमें राधा-कृष्ण के प्रेम को विशेष रूप से दर्शाया गया।

मध्यकाल के बाद, कंपनी शैली और औपनिवेशिक प्रभाव ने भारतीय चित्रकला में एक नया मोड़ लाया। ब्रिटिश संरक्षण में, भारतीय कलाकारों ने यूरोपीय तकनीकों और दृष्टिकोणों को अपनाया, जिससे एक संकर शैली विकसित हुई। राजा रवि वर्मा जैसे कलाकारों ने भारतीय पौराणिक कथाओं और विषयों को पश्चिमी यथार्थवाद के साथ चित्रित किया, जिससे उनकी कला जन-जन तक पहुँची। 20वीं शताब्दी में, बंगाल स्कूल ने भारतीय कला में राष्ट्रीयता और स्वदेशी मूल्यों को पुनर्जीवित किया। अवनींद्रनाथ टैगोर और नंदलाल बोस जैसे कलाकारों ने पश्चिमी प्रभावों से हटकर भारतीय कला परंपराओं पर ध्यान केंद्रित किया। अमृता शेरगिल जैसी कलाकारों ने भारतीय विषयों को आधुनिक यूरोपीय शैलियों के साथ जोड़ा, जिससे भारतीय कला को वैश्विक मंच पर पहचान मिली।

भारतीय मूर्तिकला का सबसे पहला और महत्वपूर्ण साक्ष्य सिंधु घाटी सभ्यता (लगभग 2500-1500 ईसा पूर्व) से मिलता है। इस काल की मूर्तियां मुख्य रूप से टेराकोटा (मिट्टी), पत्थर और कांस्य से बनी हैं। मोहनजोदड़ो की नर्तकी और पशुपति सील जैसी कलाकृतियां उस समय की उन्नत कलात्मक और तकनीकी कौशल को प्रदर्शित करती हैं। टेराकोटा की मातृदेवी की मूर्तियां, धार्मिक अनुष्ठानों और मातृशक्ति की पूजा को दर्शाती हैं।

मध्यकालीन युग में, मूर्तिकला का विकास विभिन्न क्षेत्रीय राजवंशों के तहत हुआ, जैसे कि चोल, पल्लव, चंदेल और चालुक्य। चोल कांस्य मूर्तियां, विशेष रूप से नटराज की, इस काल की मूर्तिकला की उत्कृष्ट कृतियां हैं। ये मूर्तियां न केवल धार्मिक प्रतीकात्मकता का प्रतिनिधित्व करती हैं बल्कि गति और लय का भी सुंदर चित्रण करती हैं। खजुराहो के मंदिर अपनी कामुक और जीवन-आधारित मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध हैं, जो उस समय के सामाजिक और धार्मिक विश्वासों को दर्शाते हैं।

भारतीय मूर्तिकला का अध्ययन केवल पत्थर या धातु के टुकड़ों का अध्ययन नहीं है, बल्कि यह एक सांस्कृतिक यात्रा है, जो हमें प्राचीन सभ्यताओं, धार्मिक विश्वासों और कलात्मक अभिव्यक्तियों से जोड़ती है। यह हमें यह समझने में मदद करता है कि कैसे कला ने भारतीय समाज और धर्म को आकार दिया और कैसे यह पीढ़ी-दर-पीढ़ी विकसित होती रही है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत केवल ध्वनि का एक संयोजन नहीं है, बल्कि यह सदियों पुरानी परंपराओं, गहन दार्शनिक विचारों और आध्यात्मिक अनुभवों का एक समृद्ध tapestry है। इसका अध्ययन केवल एक कला रूप सीखना नहीं, बल्कि एक जीवनशैली को अपनाना है जो अनुशासन, समर्पण और गहरी सांस्कृतिक समझ की मांग करती है। भारतीय शास्त्रीय संगीत का अध्ययन भारत की समृद्ध विरासत से जुड़ने और स्वयं के भीतर सद्भाव खोजने का एक अनूठा मार्ग प्रदान करता है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत की जड़ें प्राचीन वेदों में निहित हैं, जहाँ 'सामवेद' में भजनों के गायन के लिए नियमों का उल्लेख मिलता है। समय के साथ, यह कला रूप विकसित हुआ और दो मुख्य परंपराओं में विभाजित हो गया: उत्तर भारत का हिंदुस्तानी संगीत और दक्षिण भारत का कर्नाटक संगीत। हालाँकि दोनों की मूल अवधारणाएँ समान हैं, जैसे कि राग (मेलोडिक फ्रेमवर्क) और ताल (लयबद्ध चक्र) की प्रधानता, उनकी प्रस्तुति शैली, अलंकरण और कुछ विशिष्ट रागों में भिन्नताएँ हैं। हिंदुस्तानी संगीत में improvisation और खुली संरचना पर अधिक जोर दिया जाता है, जबकि कर्नाटक संगीत में रचनाओं की अधिक निश्चित और संरचित प्रस्तुति होती है। इन दोनों शैलियों का अध्ययन अपनी-अपनी विशिष्टताओं और सौंदर्यात्मक मूल्यों के कारण महत्वपूर्ण है।

इस संगीत का अध्ययन राग और ताल की गहरी समझ पर केंद्रित है। राग एक विशेष मूड या भावना को व्यक्त करने वाली ध्वनियों का एक विशिष्ट संयोजन है, जिसमें स्वरों की एक निश्चित आरोही और अवरोही गति होती है। प्रत्येक राग का अपना एक व्यक्तित्व और समय होता है जब उसे गाया या बजाया जाना चाहिए। दूसरी ओर, ताल संगीत को एक निश्चित लयबद्ध ढाँचा प्रदान करता है। यह विभिन्न तालों का एक जटिल चक्र होता है जो संगीत को गति और संरचना देता है। राग और ताल का सही ज्ञान और उनका प्रयोग भारतीय शास्त्रीय संगीत के अध्ययन की आधारशिला है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत का अध्ययन पारंपरिक रूप से गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से होता आया है। इस परंपरा में, छात्र गुरु के सान्निध्य में रहता है और न केवल संगीत सीखता है, बल्कि जीवन के नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को भी आत्मसात करता है। यह एक लंबा और धैर्यपूर्ण सफर है, जिसमें रियाज़ (अभ्यास) की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। निरंतर अभ्यास से ही आवाज़ या वाद्य यंत्र पर नियंत्रण, सूक्ष्म स्वरों को पहचानने की क्षमता और रचनात्मकता विकसित होती है। यह अध्ययन व्यक्ति में एकाग्रता, धैर्य और दृढ़ संकल्प जैसे गुणों का विकास करता है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत का अध्ययन कई व्यक्तिगत और सांस्कृतिक लाभ प्रदान करता है। यह मस्तिष्क को उत्तेजित करता है और स्मृति तथा एकाग्रता में सुधार करता है। इसके आध्यात्मिक पहलू मानसिक शांति और

भावनात्मक संतुलन प्राप्त करने में मदद करते हैं। यह कला रूप भावनाओं को व्यक्त करने का एक शक्तिशाली माध्यम है, जो श्रोता और कलाकार दोनों को गहराई से प्रभावित करता है। सांस्कृतिक दृष्टिकोण से, इसका अध्ययन भारत की समृद्ध कलात्मक विरासत को जीवित रखने और आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाने के लिए महत्वपूर्ण है। यह हमें अपनी जड़ों से जोड़े रखता है और हमारी पहचान को पुष्ट करता है।

आधुनिक युग में भी भारतीय शास्त्रीय संगीत का अध्ययन प्रासंगिक बना हुआ है। यद्यपि आज इसे सीखने के लिए नए तरीके और संस्थाएँ उपलब्ध हैं, गुरु-शिष्य परंपरा का महत्व अभी भी बरकरार है। वैश्विक मंच पर इसकी बढ़ती पहचान इसके सार्वभौमिक आकर्षण का प्रमाण है। इस संगीत का अध्ययन न केवल एक कला का ज्ञान प्रदान करता है, बल्कि यह आत्मा को पोषित करता है और जीवन को एक नई गहराई प्रदान करता है। यह एक ऐसी यात्रा है जो अनंत है और जिसका हर कदम ज्ञान और आनंद से भरा होता है।

निष्कर्ष

भारतीय कला एक विशाल महासागर है जिसमें अनगिनत रत्न छिपे हैं। यह केवल एक रचनात्मक अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि यह भारतीय सभ्यता की आत्मा, उसके विश्वासों, संघर्षों और आनंद का दर्पण है। इसकी विविधता, आध्यात्मिकता और गहराई इसे वैश्विक मंच पर एक अद्वितीय स्थान दिलाती है। यह कला पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होती रही है, जो भारतीय सांस्कृतिक पहचान का एक अभिन्न अंग बनी हुई है और भविष्य में भी विकसित होती रहेगी।

संदर्भ

1. अरविंद, एस. (2021, जनवरी)। भारतीय संस्कृति के आधार. पांडिचेरी: श्री अरबिंदो आश्रम प्रकाशन विभाग।
2. दिनकर, आर.एस. (2019)। संस्कृति के चार अध्याय. दिल्ली: जनवाणी प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड।
3. गैरोला, वी. (2018)। भारतीय चित्रकला. वाराणसी: वाणी प्रकाशन.
4. गैरोला, वी. (2019, 1 जनवरी)। भारतीय चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास। प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन.
5. गुप्ता, एन. (2020, 1 जनवरी)। भारतीय लोक कला: छत्तीसगढ़ के सन्दर्भ में। जयपुर: स्वाति प्रकाशन।
6. जैन, जे.जी. (2021, 31 दिसंबर)। मधुबनी पेंटिंग में परंपरा और अभिव्यक्ति। बेंगलुरु: ग्रंथ निगम।
7. मिश्रा, जे. (2018)। बुन्देलखण्ड में सजती लोक कला महबुलिया। भोपाल: मेरा गांव कॉन्क्लेव।
8. राजपुरोहित, बी.एल. (2020)। भारतीय कला और संस्कृति. दिल्ली: शिवालिक प्रकाशन.
9. शास्त्री, जी. (2021, 1 सितंबर)। भारतीय लोक कला के बदलते आयाम (चुनौतियां और संभावनाएं)। दिल्ली: नोशन प्रेस.
10. उपाध्याय, यू. (2020 जनवरी 1)। प्राचीन भारत की कला और वास्तुकला। वाराणसी: मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड।